NBT

मुंबई, सोमवार, 25 अगस्त, 2008, मूल्य 3.00 रुपये

महामुम्बई

त्वचा दान से बचाई जा सकती है जिंदगी

मुम्बई (न.प्र.)। रक्तदान, किडनी दान के जरिए लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है यह बात सर्वविदित है, परंतु कई लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि त्वचा दान

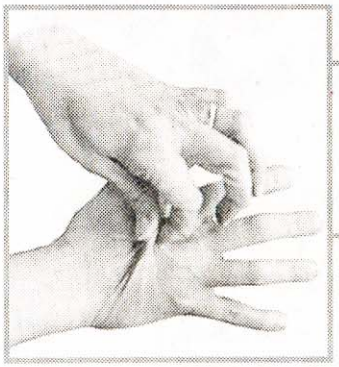

से भी किसी को नया जीवन प्रदान किया जा सकता है। आग से 40 प्रतिशत जले हुए रोगियों को भी त्वचा दान से नई जिंदगी मिल सकती है। जलने से शरीर का सुरक्षात्मक घेरा टूट जाता है जिससे इंफेक्शन और डिहाइड्रेशन होने से रोगी की मौत हो जाती है। सुरक्षात्मक घेरा फिर से बनाकर पीड़ित को नई जिंदगी दी जा सकती है।

'होमोग्राफ्ट' की इस तकनीक से करीब 40 प्रतिशत तक जले रोगियों का उपचार किया जा सकता है। डोनर की मृत्यु के 12

नेशनल बर्न्स सेंटर करता है जले हुए रोगियों का उपचार

घंटे के भीतर उसकी त्वचा निकाल कर उसका उपयोग किया जा सकता है। भविष्य में इसका इस्तेमाल करने हेतु त्वचा बैंक में रखने से पहले त्वचा की जांच की जाती है। त्वचा को दो सालों तक रखा जा सकता है। नवी मुम्बई के ऐरोली में स्थापित नेशनल बर्न्स सेंटर में ऐसे रोगियों का उपचार किया जाता है। सेंटर में एक छोटा त्वचा बैंक भी है जिसे अपग्रेड करने की योजना है।

सेंटर के चिकित्सक डॉ. एस.एम. केसवानी ने बताया कि चार साल पहले इंडियन बर्न्स सेंटर की स्थापना की गई थी। इंडियन बर्न्स रिसर्च सोसाइटी ट्रस्ट इसका संचालन करती है। मुम्बई की तेज रफ्तार जिंदगी से दूर ऐरोली के हरे-भरे इलाके में सेंटर की स्थापना की गई है। विस्तृत परिसर में सेंटर का निर्माण किया गया है। यहां रोगियों को ओपीडी सुविधा भी दी जाती है। सर दोराब टाटा ट्रस्ट व कुछ अन्य औद्योगिक इकाईयों के सहयोग से सेंटर का संचालन किया जा रहा है। सेंटर में जले हुए रोगियों का नि:शुल्क ऑपरेशन किया जाता है।

श्री केसवानी ने बताया कि मृतक के प्रति सगे-संबंधियों का भावनात्मक लगाव त्वचा दान के काम में आने वाली परेशानी है। त्वचा दान के बारे में स्कूल-कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा जिसमें बताया जाएगा कि किस प्रकार इससे जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। स्कूल इंटरेक्ट क्लब इसमें सहयोग करेगा। बर्न्स हेल्पलाइन से 022-27643333 नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।